वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 402
ISBN 978-93-82071-89-1

सुदर्शनमेरु वंदना एवं ध्यानाभ्यास

–लेखिका –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के
अमृत महोत्सव वर्ष (सन् 2013-2014) के अन्तर्गत प्रकाशित)

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.ए फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	पौष कृ. एकादशी, 28 दिसम्बर 2013	12/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन)

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

पीठाधीश की कलम से.....

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी में साहित्य सृजन की अविरल धारा को प्रवाहित करके जैनधर्म की अद्भुत प्रभावना की है तथा जैन साहित्य जगत पर भी अनंत उपकार किये हैं। विशेषरूप से आपकी लेखनी से प्रसूत पद्य साहित्य अर्थात् पूजा-विधान से जन-जन को अमोघ शस्त्र के रूप में भक्ति का मार्ग प्राप्त हुआ है।

पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य को सतत प्रकाशित करने के लिए पूज्य माताजी की ही पुण्य प्रेरणा से सन् 1972 में स्थापित दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के अन्तर्गत वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की भी स्थापना की गई, तब से लगातार इस ग्रंथमाला द्वारा साहित्य प्रकाशन का कार्य किया जा रहा है। जहाँ इस ग्रंथमाला ने लाखों श्रावकों एवं श्रद्धालु भक्तों को ज्ञान का लाभ प्रदान किया है, वहीं विशिष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन के माध्यम से इस ग्रंथमाला को भी समाज के मध्य एक विशिष्ट ख्याति प्राप्त हुई है।

इस ग्रंथमाला से जहाँ पूज्य माताजी द्वारा टीकाकृत षट्खण्डागम जैसे महान सिद्धान्त ग्रंथों तथा नियमसार, समयसार, गोम्मटसार, अष्टसहस्री, कातंत्र व्याकरण आदि जैसे मूल आगम ग्रंथों का प्रकाशन होता है, वहीं मुख्यतः पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी व प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित विभिन्न बड़े-छोटे पूजा-मण्डल विधान आदि का प्रकाशन भी समाज के लिए विशेष मांग हेतु बना रहता है। आज हम इस ग्रंथमाला को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानते हैं, जिसके माध्यम से प्रकाशित हो रहे सत् साहित्य की वर्ष भर पूरे 365 दिन भारत के कहीं न कहीं, किसी न किसी मंदिर में मण्डल

विधान या साहित्य वितरण आदि के लिए मांग आती रहती है और जैनधर्म व भक्तिमार्ग की प्रभावना में यह ग्रंथमाला नित्य ही तत्पर रहती है।

विशेषरूप से इस ग्रंथमाला द्वारा समाज को लागत मूल्य से भी कम राशि पर साहित्य उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता है, जिससे कि सुविधापूर्वक जन-जन तक साहित्य पहुँच सके। आगे भीइसी प्रकार यह ग्रंथमाला अपना दायित्व निभाती रहे, यही भावना है। वर्तमान में प्रकाशित हो रही इस पुस्तक के माध्यम से आप सभी श्रावकजन विशेष धर्मलाभ को प्राप्त करें तथा जैनधर्म का यह ज्ञान आपके सम्यक्त्व को दृढ़ करने में सदा सहकारी बनकर मोक्षमार्ग को प्रशस्त करे, सभी भक्तों को मेरी यही शुभकामनाएं एवं मंगल आशीर्वाद है।

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

सुदर्शनमेरु वंदना

।। मंगलाचरण ।।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।

सुदर्शनमेरु वंदना

तीर्थंकरस्नपननीरपवित्रजातः,
तुङ्गोऽस्ति यस्त्रिभुवने निखिलाद्रितोऽपि।
देवेन्द्रदानवनरेन्द्रखगेन्द्रवंद्यः,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।1।।

यो भद्रसालवननंदनसौमनस्यैः,
भातीह पांडुकवनेन च शाश्वतोऽपि।
चैत्यालयान् प्रतिवनं चतुरो विधत्ते,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।2।।

जन्माभिषेकविधये जिनबालकानाम्,
वंद्याः सदा यतिवरैरपि पांडुकाद्याः।
धत्ते विदिक्षु महनीयशिलाश्चतसृः,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।3।।

योगीश्वराः प्रतिदिनं विहरन्ति यत्र,
शान्त्यैषिणः समरसैकपिपासवश्च।
ते चारणर्द्धिसफलं खलु कुर्वतेऽत्र,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।4।।

ये प्रीतितो गिरिवरं सततं स्तुवन्ति,
वंदन्त एव च परोक्षमपीह भक्त्या।

ते प्राप्नुवंति किल 'ज्ञानमतिं' श्रियं हि,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।5।।

जो तीर्थंकर के न्हवन जल से पवित्र है, तीनों लोकों में सब पर्वतों से ऊँचा है और जो देवेन्द्र, असुरेन्द्र नरेन्द्र तथा विद्याधर इंद्रों से वंद्य है, उस श्री सुदर्शन मेरु को मैं सतत नमन करता हूँ।।1।।

जो शाश्वत होकर भी भद्रसाल नंदन, सौमनस और पाण्डुकवन से शोभित हो रहा है और जो प्रत्येक वन की चारों दिशाओं में जिन मंदिर को धारण कर रहा है, उस श्री सुदर्शन मेरु को मैं सतत नमन करता हूँ।।2।।

तीर्थंकर बालकों की जन्माभिषेक विधि के लिए जो पाण्डुक आदि शिलाएं हैं वे मुनिवरों से भी वंद्य हैं। जो पर्वत पाण्डुकवन में विदिशाओं में पूज्य ऐसी चार शिलाओं को धारण किये हुए हैं, उस श्री सुदर्शनमेरु को मैं सतत नमन करता हूँ।।3।।

जहाँ पर शांति की इच्छा करने वाले और समतारूपी एक अमृतरस पान के इच्छुक योगीश्वर महामुनि हमेशा विहार करते रहते हैं और वे वहाँ जाकर अपनी आकाश गमन चारण-ऋद्धि को निश्चित ही सफल कर लेते हैं, उस श्री सुदर्शनमेरु को मैं सतत नमन करता हूँ।।4।।

जो प्रीति से इस गिरिराज की सतत स्तुति करते हैं और यहाँ पर परोक्ष में ही भक्ति से वंदना करते हैं, वे निश्चित ही ज्ञान से सहित ऐसी 'ज्ञानमती' लक्ष्मी को प्राप्त कर लेते हैं, ऐसे उस श्री सुदर्शनमेरु को मैं सतत नमन करता हूँ।।5।।

तीन लोक का ध्यान

1. तीन लोक रचना बनाकर अर्थात् दोनों पैरों को फैलाकर दोनों हाथों को कमर पर रखकर खड़े होने से तीन लोक का आकार बन जाता है।

ऐसा आकार बनाकर खड़े होकर कम से कम पाँच मिनट तक तीन लोक के जिनमंदिरों की वंदना करना चाहिए।

2. इसमें नाभि के नीचे अधोलोक के जिनमंदिरों की वंदना करें।

3. नाभि के पास मध्यलोक के जिनमंदिरों की वंदना करें।

4. नाभि के ऊपर से लेकर मस्तक तक ऊर्ध्वलोक के जिनमंदिरों की वंदना करें।

5. पुनः तीनलोक के सामूहिक जिनमंदिरों एवं जिनप्रतिमाओं को नमस्कार करके वन्दना करें।

6. अनन्तर सिद्धशिला के अनन्त सिद्धों को नमस्कार करें।

इस तीन लोक के ध्यान की विधि संक्षेप में दिखाई जा रही है–

तीन लोक के अकृत्रिम–शाश्वत जिनमंदिरों की वंदना

1. अधोलोक में भवनवासी देवों के सात करोड़ बहत्तर लाख जिनमंदिर हैं।

2. मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन शाश्वत जिनमंदिर हैं।

3. ऊर्ध्वलोक में वैमानिक देवों के चौरासी लाख सत्तानवे हजार तेईस जिनमंदिर हैं।

4. तीनों लोक में आठ करोड़, छप्पन लाख, सत्तानवे हजार, चार सौ इक्यासी, ऐसे शाश्वत जिनमंदिर हैं।

5. इन तीनों लोकों के जिनमंदिर में प्रत्येक में 108-108 जिनप्रतिमाएँ हैं, जिनकी संख्या–925 करोड़, 53 लाख, 27 हजार, 9 सौ 48 है।

इन सब जिनमंदिर, जिनप्रतिमाओं को मेरा नमस्कार होवे।

6. व्यन्तर देवों के एवं ज्योतिषी देवों के असंख्यात जिनमंदिर हैं, उन सबमें 108-108 ऐसी असंख्यात जिनप्रतिमाएँ हैं उन सबको मेरा नमस्कार होवे।

7. मध्यलोक में, ढाई द्वीप में 170 कर्मभूमियाँ हैं। इनमें जितने भी अर्हंत सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य एवं चैत्यालय हैं, जितने भी कृत्रिम जिनमंदिर हैं, जितनी भी पंचकल्याणक भूमि, निर्वाणभूमि एवं अतिशय क्षेत्र हैं उन सबको मेरा नमस्कार होवे।

8. पुनः मस्तक के अग्रभाग पर अर्द्धचन्द्राकार सिद्धशिला बनाकर–बुद्धि से चिन्तन करते हुए सिद्धशिला पर विराजमान अनन्तानन्त सिद्ध भगवन्तों को नमस्कार करते हुए नीचे लिखे पद्य को पढ़ें।

–पद्य–

त्रिभुवन के मस्तक पर सिद्धशिला पर सिद्ध अनन्तानन्त।
नमों नमों त्रिभुवन के सभी, तीर्थ को जिससे हो भव अन्त।।1।।

इस प्रकार तीन लोक के ध्यान से अनन्त पुण्य का बंध होता है। असंख्य पापों का नाश एवं भूत-व्यन्तरों के प्रकोप का अभाव तथा रोगों का नाश होता है एवं संसार भ्रमण समाप्त करने की शक्ति प्रगट होती है।

समवसरण का वर्णन

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय नमः

भगवान को केवलज्ञान प्रगट होते ही इन्द्र की आज्ञा से कुबेर अर्धनिमिष में समवसरण की रचना कर देता है। उस समय भगवान तीनों लोकों को और उनकी भूत, भावी, वर्तमान समस्त पर्यायों को युगपत् एक समय में जान लेते हैं।

भगवान शांतिनाथ का समवसरण पृथ्वी से 5000 धनुष (20000 हाथ) ऊपर आकाश में अधर है। पृथ्वी से एक हाथ ऊपर से एक-एक हाथ ऊँची बीस हजार सीढ़ियाँ हैं। इनसे चढ़कर मनुष्य और तिर्यंच आदि सभी भव्य जीव-बाल, वृद्ध, अंधे, लूले, लंगड़े, रोगी आदि अंतर्मुहूर्त (48 मिनट) में ऊपर पहुँच जाते हैं। भगवान शांतिनाथ का समवसरण साढ़े 4 योजन (36 मील) का गोल है।

इसमें चार परकोटे और पाँच वेदियाँ हैं। इनके आठ भूमियाँ हैं। चारों दिशाओं में बहुत ही विस्तृत वीथी बड़ी-बड़ी गलियाँ हैं।

इस समवसरण में क्रम से पहले धूलिसाल परकोटा, चैत्यप्रासाद भूमि, वेदी खातिकाभूमि, वेदी, लताभूमि, परकोटा, उपवनभूमि, वेदी, ध्वजभूमि, परकोटा, कल्पभूमि, वेदी, भवनभूमि, परकोटा, श्रीमण्डपभूमि और वेदी है। आगे 16 सीढ़ी ऊपर चढ़कर पहली कटनी, 8 सीढ़ी चढ़कर दूसरी कटनी, पुनः 8 सीढ़ी चढ़कर तीसरी कटनी है। इसी पर भगवान विराजमान हैं।

प्रत्येक परकोटे और वेदियों में चारों दिशाओं में एक-एक गोपुर द्वार हैं। जिनमें से पूर्वदिशा में ''विजय'', दक्षिण में ''वैजयंत'' पश्चिम में ''जयंत'' और उत्तर में ''अपराजित'' ऐसे नाम हैं। इन चारों के उभय पार्श्व में दो-दो नाट्यशालाएं हैं, जिनमें देवांगनाएं भगवान की भक्ति में

विभोर हो नृत्य-गान करती रहती हैं। वहाँ द्वारों के दोनों और नवनिधि, मंगलघट और घूपघट आदि स्थित हैं। प्रत्येक परकोटे के द्वारों पर देवगण हाथ में दण्ड, मुदगर आदि लेकर रक्षक बनकर खड़े हुए हैं।

समवसरण में प्रवेश करते ही चारों गली में दिव्य रत्नमय मानस्तंभ हैं जो कि भगवान से बारहगुने ऊँचे हैं। भगवान शांतिनाथ के शरीर की ऊँचाई 160 हाथ है अतः ये बारहगुणे 160×12=1920 हाथ ऊँचे हैं। बीस योजन तक प्रकाश फैलाते हैं। इनके दर्शन से मानी का मान गलित हो जाता है और वह भव्यात्मा सम्यग्दृष्टि बनकर अनंत संसार को सीमित कर लेता है।

केवली भगवान के प्रभाव से चारों तरफ चार सौ कोस तक सुभिक्षता, हिंसा और उपसर्गादि का अभाव, सभी जन्मजात शत्रु-सिंह, हिरण आदि का आपस में मैत्री भाव, छहों ऋतुओं के फल-फूलों का एक साथ आ जाना आदि अतिशय हो जाते हैं।

भगवान के श्रीविहार में आकाश में अधर, उनके चरण के नीचे देवगण स्वर्णमय सुगंधित दिव्य कमलों को रचते जाते हैं और अहिंसा धर्म के दिग्विजय को सूचित करता हुआ 'धर्मचक्र' भगवान के आगे-आगे चलता है एवं सरस्वती-लक्ष्मी देवी आजू-बाजू में चलती हैं। आकाशगामी ऋद्धिधारी साथ में चलते हैं असंख्य देव-देवियाँ, इन्द्रादिगण पीछे-पीछे चलते हैं एवं साधारण मुनि, आर्यिकाएं, मनुष्य, पशु आदि नीचे-नीचे चलते हैं। जहाँ भगवान रुक जाते हैं वहाँ पुनः कुबेर समवसरण की रचना कर देता है।

समवसरण में आठ भूमि और तीन कटनी

1. पहली ''चैत्यप्रासादभूमि'' हैं, इसमें एक-एक जिनमंदिर के अंतराल में पांच-पांच प्रासाद हैं।

2. दूसरी ''खातिकाभूमि'' हैं, इसके स्वच्छ जल में हंस आदि कलरव कर रहे हैं और कमल आदि पुष्प खिले हैं।

3. तीसरी ''लताभूमि'' हैं, इसमें छहों ऋतुओं के पुष्प खिले हुए हैं।

4. चौथी ''उपवनभूमि'' हैं, इसमें पूर्व आदि दिशा में क्रम से अशोक, सप्तच्छद, चंपक और आम्र के वन हैं। प्रत्येक वन में एक-एक चैत्यवृक्ष हैं जिनमें 4-4 जिनप्रतिमाएं विराजमान हैं। प्रत्येक प्रतिमाओं के सामने एक-एक मानस्तंभ हैं।

5. पांचवी ''ध्वजाभूमि'' हैं, इसमें सिंह, गज, वृषभ, गरुड़, मयूर, चन्द्र, सूर्य, हंस, पद्म और चक्र इन दस चिन्हों से सहित महाध्वजाएं और उनके आश्रित लघुध्वजाएं 108-108 हैं। सब मिलाकर 4,70,880 हैं।

6. छठी ''कल्पभूमि'' हैं, इसमें भूषणांग आदि दस प्रकार के कल्पवृक्ष हैं। चारों दिशा में क्रम से नमेरु, मंदार, संतानक और पारिजात ऐसे एक-एक सिद्धार्थवृक्ष हैं। इनमें चार-चार सिद्धप्रतिमाएं विराजमान हैं ।

7. सातवीं ''भवनभूमि'' में भवन बने हुए हैं। इस भूमि के पार्श्व भागों में अर्हंत और सिद्धप्रतिमाओं से सहित नौ-नौ स्तूप हैं।

8. आठवीं ''श्रीमण्डपभूमि'' हैं, इसमें 16 दीवालों के बीच में 12 कोठे हैं जिनमें 1. गणधरादि मुनि, 2. कल्पवासिनी देवी, 3. आर्यिका

और श्राविका, 4. ज्योतिषी देवी, 5. व्यंतर देवी, 6. भवनवासिनी देवी, 7. भवनवासी देव, 8. व्यंतर देव, 9. ज्योतिष देव, 10. कल्पवासी देव, 11. चक्रवर्ती आदि मनुष्य और 12. सिंहादि तिर्यंच, ऐसे बारहगण के असंख्यातों भव्यजीव बैठकर धर्मोपदेश सुनते हैं। वहां पर रोग, शोक, जन्म, मरण, उपद्रव आदि बाधाएं नहीं हैं।

पुनः प्रथम कटनी पर आठ महाध्वजाएं हैं, द्वितीय कटनी पर आठ मंगलद्रव्य आदि है। तृतीय कटनी पर गंधकुटी में सिंहासन पर लाल कमल की कर्णिका पर भगवान शांतिनाथ चार अंगुल अधर विराजमान हैं। इनका मुख एक तरफ होते हुए भी चारों तरफ दिखने से ये चतुर्मुखी ब्रह्मा कहलाते हैं। भगवान के पास अशोकवृक्ष, तीन छत्र, सिंहासन, भामंडल, चौंसठ चंवर, सुरपुष्पवृष्टि, दुंदुभि बाजे और हाथ जोड़े सभासद ये आठ महाप्रातिहार्य हैं। वहीं पर गरुड़ यक्ष और महामानसी यक्षी विद्यमान हैं।

इन शांतिनाथ भगवान को मेरा अनंतबार नमस्कार हो।

(तिलोयपण्णत्ति हरिवंशपुराण और समवसरण स्तोत्र के आधार से)

ध्यान भजन

-आर्यिका चंदनामती

तर्ज–तन डोले.....

ॐकार बोलो, फिर आँखें खोलो, सब कार्य सिद्ध हो जाएँगे,
नर जन्म सफल हो जाएगा।। टेक.।।

प्रातःकाल उषा बेला में बोलो मंगल वाणी।
हर घर में खुशियाँ छाएँगी, होगी नई दिवाली।। हे भाई.....
प्रभु नाम बोलो, निजधाम खोलो, सब स्वार्थ सिद्ध हो जाएँगे।
नर जन्म सफल हो जाएगा।। ॐकार.....।।1।।

परमब्रह्म परमेश्वर की शक्ती यह मंत्र बताता।
णमोकार के उच्चारण से अन्तर्मन जग जाता।। हे भाई.....
नौ बार बोलो, सौ बार बोलो, सब स्वार्थ सिद्ध हो जाएँगे,
नर जनम सफल हो जाएगा।। ॐकार.....।।2।।

ॐ शब्द का ध्यान 'चंदना' मन को स्वस्थ बनाता।
इसके ध्यान से मानव इक दिन परमेष्ठी पद पाता।। हे भाई.....
ॐकार बोलो, शिवद्वार खोलो, सब स्वार्थ सिद्ध हो जाएँगे।
नर जन्म सफल हो जाएगा।। ॐकार.....।।3।।

ध्यान भजन

-आर्यिका चंदनामती

तर्ज–मन मंदिर में.....

आतम में ध्यान लगाना है, परमातम मिलेगा।
अपने प्रभू को पाना है, शुद्धातम मिलेगा।। टेक.।।

मन में जो माया व ममता भरी है।
उससे सदा बेचैनी रही है।
चैन की बंसी बजाना है, परमातम मिलेगा।
अपने प्रभू को.....।।1।।

वचनों में कटुता कषाय भरी है।
अच्छे वचन वह कहती नहीं है।।
वाणी को सुन्दर बनाना है, परमातम मिलेगा।
अपने प्रभू को.....।।2।।

काया है नश्वर आत्मा अनश्वर।
आत्मा को ध्याने से होता संवर।।
उसके ही गुण हमें गाना है, परमातम मिलेगा।
अपने प्रभू को.....।।3।।

आत्मा को ध्याओ, आत्मा में आओ।
कुछ देर तल्लीन, उसमें हो जाओ।।
''चन्दना'' उसे ही सजाना है, परमातम मिलेगा।।
अपने प्रभू को.....।।4।।

ध्यान भजन

-आर्यिका चंदनामती

तर्ज –क्या खूब.....

निज ध्यान करने से, आतमनिधि मिलती है।
तन मन की मुरझाई, कलियाँ खिलती हैं,
अन्तर के कोने में इक ज्योती जलती है।।निज.।।टेक.।।
संसार भयानक वन है-हाँ वन है,
तो भी वहाँ पर इक खिला धर्म उपवन है।
हमें पाना है उसकी छाया-हाँ छाया,
बस इसीलिए यह आतम ध्यान लगाया।
सुख शांती की प्राप्ति सदा इससे ही मिलती है,
अंतर के कोने में इक ज्योती जलती है।।निज.।।1।।
मेरा मन मंदिर निर्मल-हाँ हाँ निर्मल,
इसके अंदर इक कमल की वेदी सुन्दर।
जहाँ शांत विराजे भगवन्-हाँ हाँ भगवन्,
उस भगवन का ही करना है मुझे दर्शन।।
उस दर्शन से सच्ची दृष्टी हमको मिलती है,
अंतर के कोने में इक ज्योती जलती है।।निज.।।2।।
मैं ही ब्रह्मा मैं विष्णू-हाँ विष्णू,
मैं कष्टों को सहने में बनूँ सहिष्णू।
मैं अविचल अडिग सुमेरू-हाँ हाँ मेरू,
मैं निज मन को नहिं आकुलता से घेरूँ।
यही 'चंदनामती' शक्ति प्रभु पद से मिलती है,
अंतर के कोने में इक ज्योती जलती है।।निज.।।3।।

ध्यान भजन

-आर्यिका चंदनामती

तर्ज–कभी राम बनके.....

निज ध्यान करने, गुणगान करने,
चले आना आतम में चले आना।। टेक.।।

बड़ा चंचल है मन इसको बांधो।
बड़ा नश्वर है तन इसको साधो।।
शुद्धात्म भजने, परमात्म भजने,
चले आना आतम में चले आना।।1।।

कभी ॐकार में मन रमाओ।
कभी मन में प्रभू को बसाओ।।
मंत्र जाप करने, मन को साफ करने,
चले आना आतम में चले आना।।2।।

मन के मंदिर में वेदी बनाओ।
उसपे आतम प्रभू को बिठाओ।।
पूजा पाठ करने, मन एकाग्र करने,
चले आना आतम में चले आना।।3।।

भावों का छत्र प्रभु पे लगाओ।
''चन्दना'' श्रद्धा चंवर ढुराओ।।
प्रभु को प्राप्त करने, आतम लाभ वरने,
चले आना आतम में चले आना।।4।।